Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

8. स्वाधीनता आंदोलन में गीता-रहस्य का अवदान: एक अध्ययन

डॉ. प्रशांत कुमार राय,
आईसीएसएसआर-पीडीएफ, रिसर्च फेलो, नई दिल्ली
Email- kumarprashantrai@gmail.com

सारांश

भारत में 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध व मध्य में वेद, पुराण व उपनिषदों के रूप में जीवन दर्शन की व्यापक विरासत के बावजूद हिंदू धर्म के लोग ईश्वरीय कृपा को ही अंतिम सत्य मानते थे। उधर, पूरी दुनिया आधुनिक वैज्ञानिक अन्वेषण में आगे निकल रही थी। सन् 1857 के बाद भारतीयों में पुनर्जागरण का दौर शुरू हुआ। तब हमारे पुनर्जागरण के अग्रदूतों ने न केवल सुधार के उपायों पर विचार किया, बल्कि प्राचीन विरासत को नये दृष्टिकोण से देखना शुरू किया। उस समय देशकाल की परिस्थिति के अनुसारं लोकमान्य बाल गंगाधार तिलक ने हिंदू नवोत्थान के लिए श्रीमद्भगवद्गीता को आधार बनाया। ईश्वरीय कृपा और निवृत्ति मार्ग की अवधारणा से अलग कर्मयोग की प्रधानता को समझाया। उन्होंने इस प्रयोग को राष्ट्रवाद के उपकरण के तौर पर भी किया। राष्ट्रवाद की दिशा में बाल गंगाधर तिलक द्वारा रचित 'गीता रहस्य' पुस्तक अंग्रेजी दासता से मुक्ति का पथप्रदर्शक बन गयी। 'गीता रहस्य' राष्ट्रवादियों सहित आम भारतीयों के लिए सांस्कृतिक नवोत्थान का बीज सिद्ध हुआ। तिलक कहते थे कि कोई धर्म राष्ट्रधर्म से ऊपर नहीं हो सकता। तिलक के व्याख्यानों में कर्तव्य के सार्वभौमिक सिद्धांतों के अनुपालन का संदेश निहित था। कर्मयोगी हमेशा स्वराज्य के लिए प्रयत्न करता है। स्वराज्य स्वयं पर स्वयं की प्रभुता है। तिलक के गीता-रहस्य में भी यही भावना निहित है।

मुख्य शब्द: श्रीमद्भगवतगीता, गीता-रहस्य, स्वराज्य, कर्मयोग, हिन्दू राष्ट्रवाद

प्रस्तावना

स्वातंत्र्य संघर्ष के दौरान श्रीमद्भगवद्गीता को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के अलावा आजादी के अन्य अग्रदूतों ने भी पथ प्रदर्शक बनाया। श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय धर्म और संस्कृति का ऐसा उज्ज्वल ग्रंथ है, जो समय के साथ संपूर्ण मानव जाति का मार्गदर्शन नयी चिंतन दृष्टि के साथ करती आयी है। शंकराचार्य ने गीता में संन्यास योग देखा, तो मध्यकाल की संत परंपरा में भक्तियोग के रूप में यह लोकप्रिय हुई। सन् 1857 के बाद जिन परिस्थितियों में भारतीय जनमानस अभिशप्त था, उससे उबारने के लिए महात्मा गांधी, विनोबा भावे, अरविदों के लिए यह आदर्श पथप्रदर्शक रहा। बाल गंगाधर तिलक के लिए गीता हिंदू राष्ट्रवाद व पुनर्जागरण की कर्मदृष्टि थी। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में यह राष्ट्रभक्तों के लिए प्रेरणास्रोत बन कर उभरी।

यह एक ऐसा ग्रंथ है जिस पर दुनियाभर की विभिन्न भाषाओं में संभवतः सबसे ज्यादा भाष्य, टीका, व्याख्या,

The Asian Thinker

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

टिप्पणी, निबंध और शोधग्रंथ लिखे गये हैं। विवेकानंद ने गीता की व्याख्या में कर्मदृष्टि को प्रधान तत्व पाया, तो तिलक ने प्रवृत्ति मार्ग की अवधारणा को अपनी पुस्तक का आधार तत्व बनाया। गीता के समस्त टीकाओं व भाष्यों का अध्ययन करने के बाद तिलक ने कहा कि भगवद्गीता निवृति प्रधान नहीं है। वह तो कर्म प्रधान है। गीता का पहला भाष्य आदिगुरु शंकराचार्य ने लिखा था। इसे 'शांकर भाष्य' भी कहा जाता है। आगे चलकर गीता पर संत ज्ञानेश्वर, परमहंस योगानंद, महात्मा गांधी, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, महर्षि अरविंद, एनी बेसेंट, विनोबा भावे और ओशो आदि ने भी गहरा चिंतन-विमर्श व लेखन किया है। वस्तुतः सभी विचारकों के जीवन पर गीता ने अपना गहरा प्रभाव छोड़ा है। एक नयी चिंतन दृष्टि विकसित की है।

शोध का उद्येश्य:

1 : गीता-रहस्य के माध्यम से जीवन में प्रवृति मार्ग की व्याख्या करना

2 : हिंदू नवोत्थान के आधार स्तंभ के रूप में गीता-रहस्य को स्थापित करना

3 : गीता-रहस्य में कर्मयोग और स्वराज्य की प्राप्ति के मार्ग का अनुशीलन करना

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध पत्र में श्रीमद्भगवद्गीता और लोकमान्य बालगंगाधर तिलक द्वारा रचित गीता-रहस्य को केंद्र में रख कर हिन्दू धर्म की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। इस शोध-पत्र के लिए विश्लेषण विधि का प्रयोग करना सार्थक है।

विवेचना:

स्वाधीनता आंदोलन के भारतीय परिवेश में निवृत्ति मार्ग से प्रवृत्ति मार्ग की ओर परिवर्तन उस वक्त की बड़ी आवश्यकता थी। प्रवृत्ति मार्ग या कर्म पथ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के जीवन व मन पर बाल्यावस्था से ही दृष्टिगत थी। सन्यास और कर्म-प्रधान जीवन की व्याख्या करते हुए मांडले जेल में गीता-रहस्य ग्रंथ के रूप में उनकी यह साधना पूर्ण हुई।

सन् 1917 में अमरावती में दिए गए भाषण में श्री तिलक ने कहा कि "भगवद्गीता को सार्वभौमिक रुप से हिन्दू धर्म के सभी सिद्धांतों और दर्शन को समाहित करने वाली पुस्तक माना जाता है।'' जीवन में कई प्रश्नों का उत्तर ढूंढने के लिए उन्होंने गीता का अध्ययन शुरू किया था। तिलक का कहना था कि गीता जैसी महान कृति को पढ़ने के लिए इस पुस्तक को पूर्वाग्रह रहित और निष्प्रभावी मन से देखना चाहिए। गीता दुनिया में कर्म करने की वकालत करती है। यही गीता का उपदेश निराश अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार करने के लिए श्रीकृष्ण ने दिया था।

निवृत्ति मार्ग और अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने को लेकर देशवासियों, खासकर युवाओं के उठ खड़ा होने व युद्ध के लिए तैयार होने के लिए भगवद्गीता की कर्मपरक व्याख्या बाल गंगाधर तिलक ने की है। तब उन्होंने

The Asian Thinker

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रवृत्ति मार्ग पर आधारित "गीता रहस्य" लिखा। प्रवृत्ति मार्ग की व्याख्या सिर्फ "गीता रहस्य" में ही मिलती है। "जीवन की गहराई में तिलक ने गीता के अनुसार कर्मयोग की प्रशंसा की, और सन्यास को अपेक्षाकृत कम विशिष्ट बताया। शायद अज्ञात रूप से वे अपने दादा के कार्य के विरोध में वह अपनी प्रसुप्त भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे थे, जो उस समय सन्यासी हो गये थे।[1]"

अपनी पुस्तक गीता रहस्य में तिलक देशी-विदेशी टीकाकारों के संदर्भों को एकीकृत करते हैं। एक निष्कर्ष के रूप में प्रवृत्ति मार्ग को ही गीता का प्रधान तत्व बताते हैं। उनका यह विचार जिन संदर्भों व उदाहरणों से गीता रहस्य में वर्णित है, वह नयी अवधारणा के चिंतन को जन्म देता है।

पुस्तक में तिलक लिखते हैं- "गीता की मीमांसा के क्रम में कर्म सन्यास के लिए विभिन्न टीकाकारों के मत पर वे आक्षेप करते हैं। वे कहते हैं- जिस टीकाकार को देखो, वही गीता के आद्यांत के उपक्रम-उपसंहार तथा फल पर ध्यान न देकर निवृत्ति-दृष्टि से इस बात का विचार करने में ही निमग्न दिखाई पड़ता है कि गीता ब्रह्मज्ञान या भक्ति अपने ही संप्रदाय के कैसे अनुकूल है। मानों ज्ञान और भक्ति का कर्म से नित्य संबंध बतलाना एक बड़ा भारी पाप है।[2]

जिस वक्त लोकमान्य तिलक मांडले जेल में थे, उस समय देश भर में राजनीतिक अवसाद की स्थिति थी। पूरे देश में राजनीतिक मार्गदर्शक के रूप में किसी ऐसे नेता की आवश्यकता महसूस की जा रही थी कि वह अपने विचारों से पूरे भारत के जनमानस को उद्वेलित करे। यह प्रत्याशा तिलक के जेल से बाहर आने के बाद पूरी होती दिखती है।

1925 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भी मांडले जेल की यातना भोगी। जेल में ही उन्हें बालगंगाधर तिलक के जेल अवधि की कालकोठरी के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने लिखा है कि "मुझे आश्चर्य होता है कि इन परिस्थितियों में लोकमान्य तिलक ने गीता रहस्य जैसी कालजयी ग्रंथ की रचना की। मंडाले जेल मेंरे लिए राजनीतिक तीर्थस्थान है, भारत के एक महानतम व्यक्तित्व की यादों को संजोये हैं। यह तीर्थयात्रा मेंरे जीवन की सबसे सुखद घटनाओं में से एक है।[3]"

लोकमान्य ने ओरायन और आर्कटिक होम ग्रंथ की रचना कर उन्होंने दुनिया के समक्ष वैदिक काल में भारत के महत्व को रख दिया था। इन दो ग्रंथों से दुनिया को तिलक के प्रकांड पांडित्य से परिचय हो चुका था। लोकमान्य तिलक के तीसरे महान ग्रंथ गीता रहस्य ने दुनिया के सामने यह विमर्श पैदा कर दिया कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए सन्यास नहीं बल्कि कर्मयोग की प्रधानता है। गीता रहस्य में शंकराचार्य के सन्यास के मत को भी उन्होंने अकाट्य व्याख्या कर धुमिल कर दिया था। गीता-रहस्य में तिलक ने कहा है कि मोक्ष का एक मात्र रास्ता कर्म ही है। भगवद्गीता में मोक्ष के लिए सन्यास को सर्वोत्तम रास्ता माना गया है। ऋषि मुनियों ने भी मोक्ष की प्राप्ति के लिए भगवद्गीता के निवृति मार्ग पर चलने का उपदेश दिया लेकिन तिलक ही एक मात्र ऐसे विद्वान मालूम पड़ते हैं जिन्होंने गीता की प्रवृति मार्ग की व्याख्या की है। इस पुस्तक की रचना करने के पहले तिलक

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

ने मांडले जेल में रहते हुए करीब चार सौ ग्रंथों का अध्ययन किया था। कई प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन कर बताया कि गीता का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को कर्म की ओर ले जाना है। बिना कर्म मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। तिलक ने कर्मयोग से भारतीय संस्कृति और जनमानस को एक नई दिशा दे दी।

'गीता रहस्य' के पहले प्रकरण में ही लोकमान्य बालगंगाधर तिलक 'गीता' का महात्म्य बखान करते लिखते हैं- 'श्रीमद्भगवद्गीता हमारे धर्म ग्रंथों का एक अत्यंत तेजस्वी और निर्मल हीरा है। पिंड-ब्रह्मांड-ज्ञान सहित आत्मविद्या के गूढ़ और पवित्र तत्त्वों को थोड़े में और स्पष्ट रीति से समझा देनेवाला, उन्हीं तत्वों के आधार पर मनुष्यमात्र के पुरुषार्थ-की-अर्थात् आध्यात्मिक पूर्णावस्था की पहचान करा देने वाला गीता के समान ग्रंथ, संस्कृत की कौन कहे, समस्त संसार के साहित्य में भी नहीं मिल सकता।[4]'

"उपनिषद्, वेदान्त और गीता, ये हिन्दुओं के प्रधान ग्रंथ रहे हैं तथा समय-समय पर, हिन्दुत्व के भीतर जो भी सन्त और सुधारक पैदा हुए, उनमें से कई ने इन तीनों पर टीकाएं लिख कर हिन्दुत्व को उस दिशा की ओर मोड़ने की कोशिश की, जिधर वे उसे ले जाना चाहते थे। तिलक जी ने इन तीनों में से केवल गीता को लिया है, क्योकि उपनिषदों और वेदान्त के अपेक्षाकृत पीछे छूट जाने पर भी, गीता का, हिन्दुओं के घर-घर में प्रचार था।[5]'

जेल में गीता रहस्य की पृष्ठभूमि

जेल में बिताये अनुभव को लोकमान्य तिलक ने भी साझा किया। "1914 को जेल से रिहाई के बाद तिलक ने एक साक्षात्कार में कहा था कि मैं नहीं जानता था कि मेरे साथ क्या होनेवाला है, अगर किताबों के संसर्ग की मुझे अनुमति नहीं होती, जो कि जेल अवधि के दौरान मेरी पूरी दुनिया बन गयी थी। परिसर के बाहर एक तरह से शून्य की स्थिति थी। पुस्तकों के मामले में भी अलग-अलग पाबंदियां लगायी जाती रहीं। हालांकि, परीक्षण के बाद जेल प्रशासन द्वारा मुझे किताबें उपलब्ध करा दी गयी। 'बर्मा सरकार से शिकायत के बाद गीता रहस्य लिखने के दौरान मुझे सभी किताबें रखने की अनुमति मिल गयी। रिहाई के वक्त मेरे पास 400 किताबें थी।[6]'

1914 में छुटकर आये तो जेल प्रशासन ने इसकी पांडुलिपि को बाहर साथ लाने की अनुमति नहीं दी। उसने तर्क दिया कि पहले इसकी जांच करायी जायेगी। तिलक के हितैषियों को जेल प्रशासन की मंशा पर शक हुआ, तब तिलक ने कहा कि चिंता की कोई बात नहीं, गीता रहस्य के एक-एक शब्द उन्हें याद है। मराठी विशेषज्ञों से जांच के उपरांत तसल्ली हो जाने पर इसे तिलक को सौंप दिया गया। पहली बार इसकी 5000 प्रति प्रकाशित की गयी। असर यह हुआ एक महीने के अंदर सारी प्रतियां बिक गयी।

तिलक का "गीता रहस्य" व स्वराज्य का उद्घोष

विलियम बेंटिक, मेटकॉफ, मैकाले आदि अंग्रेजी प्रशासकों ने भले ही भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के प्रयासों में सहयोग किये हो, लेकिन भारतीय संस्कृति और परंपरा को लेकर उनकी नीतियां घृणात्मक ही रही। उनके सुधारवादी दृष्टिकोण में पाश्चात्य संस्कृति को प्रचारित-प्रसारित करने की मंशा

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

समाहित थी। मैकाले ने भारतीय संस्कृति को आधुनिक अंग्रेजी शैक्षिक सुधार के जरिये खत्म करने की व्यूह रचना की। इसके विरोध में लोकमान्य तिलक ने अंग्रेजी शिक्षा को हमारी वैदिक शिक्षा संस्कृति को दृढता प्रदान करने के उपकरण के तौर पर इस्तेमाल किया। पश्चिम की भौतिकवादी विचारधारा को वह राष्ट्रीयता के पतन का पर्याय मानते थे। उनका राजनीतिक दर्शन वेद व गीता के सिद्धांतों पर आधारित था। लोगों में आध्यात्मिक शक्ति नैतिक प्रेरणास्रोत के रूप में गीता को प्रचारित किया। वे संस्थाओं के अंग्रेजीकरण का पुरजोर विरोध करते थे।

लोकमान्य तिलक वैदिक शिक्षा के जरिये भारतीय जनमानस में अपने अधिकार व कर्तव्य की भावना को विकसित करना चाहते थे। उनका सारा प्रयास ही स्वराज्य की प्राप्ति की ओर था। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे शिक्षा के भारतीय स्रोतों को जरूरी मानते थे। भारतीय जनमानस में राष्ट्रप्रेम की अवधारणा को निरूपित करने और स्वराज्य प्राप्ति के लिए संघर्ष को उद्वेलित करने को प्रयास करते रहे।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने जेल से निकलने के बाद जब स्वराज का नारा दिया, तो समूचे देश में क्रांति की एक अलख जग गयी। बाकी सारे राजनेता अपने-अपने तरीके से अंग्रेजी शासन का विरोध कर ही रहे थे। तिलक अपनी सोच व विचारधारा के रास्ते अंग्रेजी शासन के विरोध में लोगों को एकजुट करने में जुटे थे।

सन् 1905 के बाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की परंपरा में भारत को राजनीतिक अधिकार देने और पूर्ण स्वराज की मांग और उसकी प्राप्ति हेतु उग्र राष्ट्रवादी आंदोलनों का जन्म हुआ। तिलक कांग्रेस के गरम दल के प्रखर सदस्य थे। तिलक का स्वराज्य की हुंकार युवाओं में राष्ट्रवाद का प्रतीक बन गया।

विष्णुचंद्र शर्मा लिखते हैं कि “कलकत्ता से लौटने पर जब लोकमान्य तिलक नागपुर पहुंचे। प्रत्येक स्टेशन पर हजारों लोग उनके स्वागत में खड़े थे। छात्र उनके रथ को अपने हाथों से खींचकर कुछ दूर तक ले गये। रास्ते भर ढोल बज रहे थे। छत से फूलों की वर्षा की जा रही थी। जनसभा में छात्रों ने उन्हें मान पत्र दिया। छात्रों ने उनको राह दिखाने की मांग की। तब तिलक ने गीता पर भाषण दिया। छात्रों को कर्म का अर्थ समझाया।[7]”

स्वराज्य की इस मांग के समर्थन के लिए उन्होंने अपनी पूरी ताकत लगा दी। केसरी में भी इसके समर्थन में कई लेख प्रकाशित हुए। तिलक का मानना था कि कोई ऐसा प्रश्न नहीं जिसका जवाब गीता में नहीं हो। “लोकमान्य तिलक का गीता रहस्य दार्शनिक विचारधारा की उनकी सबसे बड़ी देन कही जाती है। तिलक जी ने भारत के सामने एक नया आदर्श रखा और यह आदर्श था जनता की निस्वार्थ सेवा का आदर्श”[8]।

वस्तुत: तिलक के राजनैतिक दर्शन का आधार प्राचीन समय के गौरव के पुनरूद्धार से प्रेरित था। वह वेद एवं गीता के उपदेशों को कर्म के रूप में परिवर्तित करना चाहते थे। उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक शक्ति एवं नैतिक साहस की प्रेरणा दी। वे प्राचीन भारतीय नैतिक मूल्यों द्वारा भारत का सुधार व नवोत्थान करना चाहते थे।

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

निष्कर्ष:

हिंदू राष्ट्रवादी नवोत्थान के लिए लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के "गीता रहस्य" की उपादेयता समस्त मानव जीवन के लिए अमूल्य देन है। सनातन धार्मिक संस्कारों में श्रीमद्भगवद्गीता ईश्वर की वाणी के रूप में लोकप्रिय है। संस्कृत, वेद, शास्त्रों पर तिलक का गूढ़ अध्ययन था। पूरब-पश्चिम की विचारधारा को भारतीय परिप्रेक्ष्य में उन्होंने तुलनात्मक प्रस्तुति गीता रहस्य में की है। एक संत, एक सुधारक, एक नेतृत्वकर्ता, एक शिक्षक, एक गुरु, एक क्रांतिप्रणेता आदि संज्ञाएं लोकमान्य के लिए कम ही है। गीता रहस्य सनातन संस्कृति को नयी संजीवनी देती है, वर्षों की दिशाभ्रमित व शिथिल भारतीय समाज की सोच को भी जागृत करती है। तिलक का गीता रहस्य प्रवृतिमार्गी है। श्रीमद्भागवतगीता पर लिखे गए विभिन्न संप्रदायों के भाष्य पर तिलक कहते थे कि यह सब मजबूरी में की गयी व्याख्या थी। तिलक कभी भी गीता को भक्ति और सन्यासी होने का ग्रंथ नहीं बताते हैं। आखिरकार, अर्जुन भी गीता का ही उपदेश सुनने के बाद युद्ध के लिए प्रवृति होते है। श्रीकृष्ण अर्जुन को यह नहीं कहना चाहते थे कि सन्यास ले लो। हर समय भक्ति में लीन रहो। यदि ऐसा होता तो गीता का पाठ करने की आवश्यकता नहीं थी।[9]

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1: लोकमान्य तिलक: जीवन और दर्शन, आचार्य डॉ विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा पृष्ठ संख्या-9

2: बाल गंगाधर तिलक: गीता रहस्य, पृष्ठ संख्या-56

3: Reminiscences and anecdotes of lokmanya tilak, S.V Bapat, keshri press, Page no.205-209

4: बालगंगाधर तिलक, गीता रहस्य, पृष्ठ संख्या-37

5: रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पेज- 610

6: राष्ट्र निर्माता तिलक, एनजी जोग, पब्लिकेशन डिवीजन, पेज-116

7: तिलक द टॉर्च बियरर ऑफ स्वराज, विष्णुचंद्र शर्मा, पब्लिकेशन डिवीजन, पेज -35-36

8. महाजन, आधुनिक भारत का इतिहास, एस चंद एंड संस कंपनी, नयी दिल्ली, पेज- 598

9. 14 सितंबर 1914 - केसरी का लेख

***